ऐ मुस्लिम बहन

मुस्लिम का मतलब होता है, अल्लाह का फ़र्माबरदार (आज्ञाकारी) होना. इस्लाम में यह ज़िम्मेदारी मर्द व औरत दोनों पर एक समान रूप से लागू है या'नी इसमें कोई जिन्सी (लैंगिक) भेदभाव नहीं है.

इस किताब में क़ुर्आन व सहीह हदीषों की रोशनी में **50 अहमतरीन नसीहतों** का ज़िक्र किया गया है. अगर इन पर अमल किया जाए तो औरत अल्लाह की नेक बन्दी बनने के साथ-साथ समाज में इज़्ज़त और वक़ार (सामाजिक प्रतिष्ठा) भी पा सकती है. लेकिन ये बेहद अफ़सोस की बात है कि **आधुनिकता** और **नारी-स्वतंत्रता** के नाम पर औरतों को आवारगी और गुमराही की तरफ़ धकेला जा रहा है.

वैसे तो ये नसीहतें हर औरत के लिये मुफ़ीद (लाभप्रद) हैं. लेकिन हिदायत की रोशनी से महरूम (वंचित) और दुनियवी चकाचौंध में अंधी हो चुकी जदीद ता'लीमयाफ़्ता (आधुनिक शिक्षा प्राप्त) कुछ औरतों को ये नसीहतें **'बोझल, दकियानूस और मर्दवादी'** लग सकती हैं. जब आज़ादी का मतलब, आवारगी समझा जाने लगे तो इन्सान सोचने-विचारने की ताक़त खो देता है.

यह किताब औरतों से गुज़ारिश (निवेदन) करती है कि जवानी की चकाचौंध के पीछे छुपे बुढ़ापे के घनघोर अंधेरे को देखें जो दबे पाँव उनकी ओर बढ़ रहा है. ये तो सिर्फ़ दुनियवी नुक़्सान की बात है जिसकी अभी भी भरपाई हो सकती है लेकिन आख़िरत के दिन अफ़सोस करना भी कोई काम नहीं आएगा.

ऐ मुस्लिम बहन

क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में 50 नसीहतें

अब्दुल अज़ीज बिन अब्दुल्लाह

पेश लफ़्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्हम्दुलिल्लाहि वस्सलातु वसल्लामु अला रसूलिल्लाहि (ﷺ)

ऐ मुस्लिम बहन! सुन, ये दास्तान एक ऐसी औरत की है जिसे अल्लाह तआला ने बहुत सारी ख़ूबियाँ अता कर रखी थी। उसकी चन्द ख़ूबियों पर आप भी ग़ौर कीजिये,

वो एक मुत्तक़ी, नेक, सालेहा, हमेशा ख़ैर की बात करने वाली औरत थी। अल्लाह के ज़िक्र से कभी ग़ाफ़िल न रहने वाली, कोई फ़िज़ूल बात ज़बान से न निकालने वाली, जहन्नम का कभी ज़िक्र आ जाये तो उसकी सख़्तियों को ध्यान में रखते हुए अल्लाह की बारगाह में आजिज़ी व इंकिसारी के साथ हाथ उठाकर उससे पनाह मांगने वाली, जब जन्नत का ज़िक्र आये तो उसे हासिल करने के शौक़ में हाथ फैला कर गिड़गिड़ाते हुए उसका हक़दार बनने की अल्लाह से इल्तिजा करने वाली। वो एक ऐसी औरत थी, जो कि लोगों से मुहब्बत व उल्फ़त रखने वाली थी और लोग भी उससे मुहब्बत उल्फ़त रखते थे।

अचानक एक दिन वो अपनी रान में शदीद (तेज़) दर्द महसूस करने लगी। इलाज के तौर पर घरेलू इलाज और गर्म पानी से सेक वग़ैरह के तरीक़े इस्ते'माल किये गये लेकिन उसके दर्द में कोई कमी न आ सकी। घरवालों ने बहुत से अस्पतालों के चक्कर भी लगाए लेकिन दर्द में कमी न हुई। डॉक्टरों के मश्वरे के बाद उसे ख़ाविंद के साथ लंदन के एक नामी-गिरामी अस्पताल ले जाया गया, शुरूआती इलाज के बाद वहाँ बहुत से टेस्ट किये गये। जिनसे ज़ाहिर हुआ कि उसकी रान में दर्द के मक़ाम पर कैंसर हो चुका है, जिसकी वजह से उसके ख़ून में सड़न और बदबू पैदा हो चुकी है।

स्पेशलिस्ट डॉक्टरों के काफ़ी सोच व विचार के बाद फ़ैसला हुआ कि उसकी रान को टाँग के सिरे से काट दिया जाये वरना बीमारी सारे बदन में फैल जाने का अन्देशा है। अब उस अल्लाह की बन्दी को ऑपरेशन रूम में चित्त लिटा दिया गया। अल्लाह के फ़ैसले और क़ज़ा व क़द्र के सामने वो बेबस है, लेकिन इस हाल में भी वो अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं थी। अपनी आजिज़ी व इंकिसारी (बेबसी) उसी के सामने पेश कर रही है लेकिन फिर भी उसकी ज़बान ज़िक्रे इलाही से रुकी नहीं। ये टाँग काट देने

वाला मा'मला कोई मा'मूली काम नहीं, टाँग को काटना ही है और जिस्म के एक हिस्से को मा'ज़ूर (विकलांग) करना ही पड़ेगा।

डॉक्टरों की जमाअ़त ने तय किये गये वक़्त पर ऑपरेशन की तैयारी कर ली, टाँग काटने का निशान लगा दिया गया और मशीन के कटर में ब्लेड फिट कर दिया, सब डॉक्टरों की मौजूदगी में एक अनजाने ख़ौफ़ व हिरास के आ़लम में मशीन को चला दिया गया लेकिन मशीन के ह़रकत करने में कुछ ख़राबी पैदा हुई, **ब्लेड फ़ौरन टूट गया और मशीन की पावर बंद कर दी गई।** ब्लेड तब्दील (चेंज) करके फिर दोबारा मशीन चलाई गई, ब्लेड फिर टूट गया। डॉक्टरों हैरानगी की ह़ालत में फिर फ़ैस़ला किया कि ब्लेड बदला जाये। **अल्लाह का हुक्म ही न हो तो ब्लेड कैसे काट सकता है, फिर ब्लेड बदला गया तीसरी बार ब्लेड फिर ऐसा टूटा कि डॉक्टरों के हौस़ले भी टूट गये।** ये क्या माजरा है? वही टाँग जिसे काटने के लिये पूरे ह़र्बे इस्तेमाल किये गये अब वही तमाम डॉक्टरों परेशानी की ह़ालत में अलग-अलग होकर मश्वरा कर रहे हैं कि अब इस ज़ख़्म को नश्तर (चाकू) से खोल कर ऑपरेशन कर लिया जाये जो शायद इसके लिये फ़ायदेमंद हो।

ऑपरेशन किया गया, दर्द की जगह को नश्तर से चीरा गया तो रान से गला, सड़ा, बदबूदार एक रूई का टुकड़ा मिला जिसने सारे बदन और ख़ून को मुताष्ष़िर (प्रभावित) कर रखा था। रूई के बदबूदार टुकड़े को निकाल दिया गया ज़ख़्म बंद कर दिया गया। वो 'दर्द' जिसने सारे जिस्म को तकलीफ़ दे रखी थी, दिन-रात के आराम को ख़त्म कर रखा था और वो दर्द जिसके आधार पर टाँग काटी जा रही थी, अल्लाह के हुक्म से न टाँग काटी गई और न दर्द ही बाक़ी रहा।

औ़रत महसूस कर रही है कि दर्द नहीं रहा और अल्लाह के हुक्म से टाँग कटने से बच गई, डाक्टर स़ाहिबान जिनके चेहरों पर ता'ज्जुब के आष़ार अभी तक दूर नहीं हुए थे वे आपस में बातचीत कर रहे थे और उसके ख़ाविंद से पूछा कि क्या कभी उसकी रान का ऑपरेशन हुआ था? ख़ाविंद के बताने पर मा'लूम हुआ कि काफ़ी अ़र्सा पहले एक रोड एक्सीडेण्ट में उसकी बीवी की उसी टाँग पर चोट आई थी जिसकी वक़्ती त़ौर पर इलाज कर दिया गया लेकिन बाद में न कभी एह़सास हुआ और न कभी दर्द। पूरा क़िस्सा सुनने के बाद सबकी ज़बान से यही बात निकली कि अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला की ख़ास़ इनायत का ही ये सारा नतीजा है कि उस औ़रत की टाँग मह़फ़ूज़ रही, अल्ह़म्दुलिल्लाह! औ़रत की ख़ुशी की इन्तिहा न रही, ख़त़रों के सारे बादल छंट गये, उसे एह़सास हो गया कि अब मुझे डॉक्टरों के कहने के मुत़ाबिक़ एक टाँग पर नहीं चलना पड़ेगा। उसकी ख़ुशी, अल्लाह की मेहरबानी और रब्बे करीम की रह़मते ख़ास़ के राग अलाप रही थी और उसे पूरा यक़ीन था कि अल्लाह की रह़मत उसके क़रीब थी जिसे वो तकलीफ़ के दौरान भी महसूस करती रही।

ऐ मुस्लिम बहन!

उस औ़रत की मिष़ाल अल्लाह के औलिया (जिनकी गिनती नामुम्किन है) की मिष़ालों में से एक मिष़ाल है जिन्होंने अल्लाह के अह़काम की पाबंदी की, दूसरों की रज़ा छोड़कर अल्लाह की रज़ा चाही, उसी मुह़ब्बत को अपने दिलों में बसाया और सुबह़ और शाम उसी के नाम के गीत गाते हुए जिनकी ज़बानें नहीं थकती बल्कि और ज़्यादा लज़्ज़त महसूस करती हैं। यही वजह हैं जो अल्लाह के अह़काम बड़े शौक़ से क़ुबूल करते और बड़ी मुह़ब्बत से उन पर अ़मल करते हैं; अल्लाह तआ़ला भी उन्हें कभी बे-यार व मददगार (लावारिस, बेसहारा) नहीं छोड़ता बल्कि उनकी मदद करता है, उन्हें क़ुव्वत अ़त़ा करता है और उन्हें अपनी रज़ा से नवाज़ते हुए जन्नतों में दाख़िल कर देता है।

ऐ मुस्लिम बहन!

इस दुनिया में इंसान अपनी इस हमेशा न बाक़ी न रहने वाली त़ाक़त और ख़त्म हो जाने वाले माल व दौलत पर फ़ख़्र किये बैठा है। वो अपने आपको सब लोगों से ज़्यादा बाइज़्ज़त और बावक़ार समझता है। लोगों को बातों के ज़रिये सबसे बेहतर क़ाइल कर सकता है, सबसे ज़्यादा हाथ पांवों मार सकता है, वो बड़े मज़बूत दलाईल का मालिक है, उसके बड़े दोस्त-अह़बाब और बड़े ह़वारी हैं, उसे किसी चीज़ की मुह़ताजी नहीं।

लेकिन नादान! उसे क्या मा'लूम कि जब ज़माने की हवा मुस़ीबतें लेकर आती है तो उसे भी पहुँच कर रहती है और हो सकता है उसकी सहूलियतें उसी के लिये आख़री ष़ाबित हों, उसकी सरबराही (सत्ता) चली जाये, उसकी इ़ज़्ज़त वक़ार (प्रतिष्ठा) ख़त्म हो जाये और वो उस बच्चे की त़रह़ बेसहारा हो जाये जो अपने बाप की तलाश में दौड़ता फिरता है, लोगों की मदद का त़ालिब हो, बदह़ाली के ऐसे मक़ाम पर पहुँच जाये कि लोगों से रह़म व करम की भीख माँगने वाला बन जाये।

ऐ मुस्लिम बहन!

मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औ़रत को इम्तियाज़ (श्रेष्ठता) का रुतबा तब तक मिलता है जब तक वो अल्लाह की ज़ात से ता'ल्लुक़ बना कर रखता है। अपनी ज़िंदगी शरीअ़ते मुत़ह्हरह (पवित्र इस्लामी जीवन शैली) के मुत़ाबिक़ गुज़ारता है और जिसको शरीअ़त की बात पर अ़मल करने में राह़त और दिल का सुकून नस़ीब होता है।

आप जब कभी भी उन्हें देखेंगे तो उनके चेहरों पर मुस्कुराहट ही नज़र

आयेगी, चाहे उनके हालात कितने ही परेशानी और मुश्किलों से भरे क्यों न हों। वो जानते हैं कि जो मुसीबत उनको पहुँची है वो रुकने वाली नहीं थी और जो मुसीबत नहीं पहुँची वो आने वाली नहीं थी। वो किसी पसंदीदा चीज़ के न मिलने का कभी भी अफ़सोस नहीं करते और किसी नापसंदीदा (अप्रिय) चीज़ के पहुँच जाने को कभी बोझ और मुसीबत नहीं समझते। कभी ऐसा भी होता है कि पसंदीदा चीज़ मिल जाने के बाद नदामत, शर्मिंदगी और घाटा हो जाता है और कभी नापसंदीदा चीज़ के मिलने पर भलाई, ख़ुशी और फ़ायदा मिल जाता है।

अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने अपने कलामे पाक में कितने ही अच्छे अंदाज़ में इस नादान इंसान को समझाने के लिये बयान फ़र्माया :

'मुमकिन है तुम किसी चीज़ को बुरा जानो दरअसल वही तुम्हारे लिये भली हो और ये भी मुमकिन है कि तुम किसी चीज़ को अच्छा जानते हो हालाँकि वो तुम्हारे लिये बुरी हो।' (सूरह बक़रः : 216)

उन्हें दुनिया की चमक-दमक, ज़ैबो-ज़ीनत, बनावट और सजावट, फ़ख़्र-गुरूर और तकब्बुर में नहीं डालती, लेकिन जो मुक़द्दर में लिखा जा चुका है वो उन्हें छोड़ भी नहीं सकते। कुर्आन करीम में फ़र्माने इलाही है :

'और जो कुछ अल्लाह तआला ने आपको दे रखा है उसमें से आख़िरत के घर की तलाश भी रखो और अपने दुनियावी हिस्से को भी न भूलो।' (सूरह क़सस : 77)

या'नी आ'माल, आख़िरत के लिये भी करो और दुनिया के लिये भी करो। दुनियवी ज़िंदगी पर भरोसा न होने का इल्म रखते हुए और माहौल, समाज और वक़्त की मुसीबतों व तकलीफ़ को मद्देनज़र रखते हुए ये किसी इंसान के लिये मुनासिब नहीं कि वो गुस्से में आकर आपे से बाहर हो जाये या किसी चीज़ के न मिलने पर अफ़सोस करे क्योंकि ये दुनिया उस उख़रवी घर **'दारुल क़रार'** (जो हमेशगी वाला घर है) के बराबर नहीं हो सकता है। जहाँ हर क़िस्म की ऐसी ने'मतें मौजूद हैं जो न किसी आँख न देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न ही किसी सच्चे मुस्लिम के दिल में खटकीं।

ऐ मुस्लिम बहन!

याद रख! दुनियावी ज़िंदगी अगर रुकावट से ख़ाली और मुसीबत व मुश्किलात से पाक भी हो जाये (जो है तो नामुमकिन) लेकिन सिर्फ़ मौत का तज़्किरा कर देना ही उसकी मिठास भरी लज़्ज़तों को कड़वाहट और कषरत को क़िल्लत में बदल देता है।

इंसान तो चाहता है कि मेरी ज़िंदगी बहुत लम्बी हो। किसी क़िस्म की मुसीबत, कोई परेशानी, कोई बीमारी वग़ैरह न आये, लेकिन दस्तूरे दुनिया है कि एक मुसीबत अगर ख़त्म होती है तो दूसरी आ घेरती है। क़रीबी रिश्तेदारों की मौत अभी भूल नहीं पाते कि दोस्त अह्बाब में से किसी की मौत का पैग़ाम मिल जाता है। जिस्म से एक दर्द ख़त्म होता है तो दूसरा पकड़ लेता है।

लेकिन इंसान की कमज़ोरी कितनी ह़क़ीर और कितनी ही बे-सरो सामान है। आप जब उसे जवानी में देखते हैं कि मुकम्मल तौर पर ज़िंदगी के हर शुअबे से गुज़रने वाला, राज़ी-ख़ुशी रहने वाला और भरे जिस्म से लुत्फ़ उठाने वाला, अपनी जवानी के उरूज (शिखर, टॉप) पर भी नहीं पहुँच पाता कि चेहरे पर बुढ़ापे के आषार, कमर में झुकाव, जिस्म में कमज़ोरी और काम में कमी वाक़ेअ हो जाती है। आप जिसे देखा करते कि मालदार था, महलों में रहने वाला, गाड़ियों और जहाज़ों के बग़ैर सफ़र न करने वाला, क़ालीनों पर जिसका उठना-बैठना था वक़्त ने करवट बदली तो उसे वहाँ रहने को जगह मिली जहाँ कभी रहना पसंद न करता था। सवारी वो मिली जिस पर बैठना अपने लिये लायक़ न समझा, लिबास वो नसीब हुआ जो कभी वो मुलाज़िमों के लिये भी मुनासिब न समझता, ग़र्ज़ ये कि ह़ालाते ज़िंदगी बिल्कुल बदल जाते हैं, अमीरी से ग़रीबी और ख़ुशह़ाली से बदह़ाली में बदल जाते हैं।

ऐ मुस्लिम बहन!

ये किताब चंद नसीह़तों का एक मज्मूआ (संग्रह) है जो आपके लिये पेश किया गया है, जो वक़्त गुज़र चुका है उस पर शर्मिन्दा होते हुए आइंदा ज़िंदगी में उन पर अमल करके बेहतर बनाया जा सकता है। अल्लाह के हुक्मों से ज़िंदगी परेशानी से राह़त में, बदबख़्ती से ख़ुशबख़्ती में बदल जायेगी। इसलिये बग़ैर किसी दुश्वारी के, सोच व विचार करके, ख़ुशी-ख़ुशी अपना वक़्त बसर करें। जिसने आप पर ज़ुल्म किया उसे दरगुज़र कर दें, जिसने आपके लिये बुरा और ग़लत सोचा उसे माफ़ कर दें। छोटों पर रह़म और बड़ों की इज़्ज़त करें, लोगों की ख़िदमत में आगे रहना आपको अच्छा लगे। हर काम अल्लाह को राज़ी करने के लिये करें, जब कोई मुसीबत आ जाये तो सब्र करें। ऐसे इंसान को जब मौत आती है तो इस दुनिया की ख़राबियों से बिल्कुल पाक-साफ़ होकर जन्नतुल ख़ुलूद की तरफ़ चला जाता है। अल्लाह तआला से दुआ है कि ये किताब हर मर्द व औरत के लिये मुफ़ीद षाबित हो। आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आलमीन!!

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह अल मक़्बल

(लेखक)

ज्यादा बातें करना

01. फ़िज़ूल और ज़्यादा बातें करने से बचना :

कुर्आन मज़ीद का इर्शाद, **'लोगों की ख़ुफ़िया सरगोशियों में अक्षर व बेशतर कोई भलाई नहीं होती। हाँ अगर कोई पोशीदा तौर पर सदक़ा व ख़ैरात करे या किसी नेक काम की तल्क़ीन करे या लोगों में सुलह कराने के लिये (मश्वरा वग़ैरह कर ले)।'** (सूरह निसा : 114)

ऐ मुस्लिम बहन! आपको इल्म होना चाहिये कि आपकी हर बात को लिखने वाले और उसे नोट करने वाले हर वक़्त मौजूद हैं, अल्लाह तआला का फ़र्मान है :

'एक दायें तरफ़ और एक बायें तरफ़ बैठा हुआ है। तुम जो बात भी मुँह से निकालते हो, उस पर निगरान मौजूद है।' (सूरह क़ाफ़ : 17-18)

इसलिये बेहतर है कि आप जो बात करें बड़ी मुख़्तसर (छोटी), बा-मआनी (सार्थक) और बामक़सद हो और जो बात मुँह से निकालें सोच-समझ कर निकालें!

02. क़ुर्आन करीम की तिलावत करना :

कोशिश ये हो कि हर रोज़ कुर्आन की तिलावत की जाये, क़ुर्आन पढ़ना आपका रोज़ाना का मा'मूल बन जाना चाहिये। और ये भी कोशिश करें कि जितना हो सके उतना ज़बानी हिफ़्ज़ किया जाये ताकि क़यामत के रोज़ अज्रे अज़ीम, आला दर्जात और बेहतरीन मक़ाम से नवाज़ा जाये। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) का इर्शादे गिरामी है, **'साहिबे क़ुर्आन को कहा जायेगा कि (ठहर-ठहरकर) तर्तील से पढ़ता जा और चढ़ता जा और इसी तरह क़ुर्आन की तिलावत करता जा जैसे दुनिया में (ठहर-ठहर कर) किया करता था तेरी मंज़िल वहाँ होगी जहाँ तेरी आख़री आयत की तिलावत होगी।'** (अबू दाऊद : 1464)

03. हर सुनी हुई बात को बयान न करना :

ये अच्छी बात नहीं कि जो आप जो कुछ सुनें उसे आगे बयान करें, हो सकता है उसमें कुछ झूठ की मिलावट हो। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया,

'आदमी के लिये यही झूठ काफ़ी है कि हर सुनी बात को बयान करे।'
(सहीहुल जामेअ सग़ीर : 4482)

04. बड़ाई बयान करने से बचना :

फ़ख़्रिया कलिमात (गर्वीली बातें) कहना और बड़ाई बयान करना और जो चीज़ आपके पास नहीं उसको अपनी मिल्कियत ज़ाहिर करना। अपनी ज़ात को ऊँचा दिखाने और लोगों की नज़रों में बड़ा बनने के लिये कोई अल्फ़ाज़ इस्तेमाल न करें।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) बयान करती हैं कि एक औरत ने कहा, **'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! किसी को बताऊँ कि ये चीज़ मेरे ख़ाविंद ने दी है जबकि उसने नहीं दी होती तो क्या ऐसा कहने में कोई हर्ज है?'** तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'वो ऐसा है जैसा कोई बनावटी कपड़े पहनने वाला हो।'** (या'नी ये धोखा है, फ़रेबकारी है)। (बुख़ारी : 5219, मुस्लिम : 5705)

05. अल्लाह का ज़िक्र करते रहना :

ऐ मुस्लिम बहन! हर वक़्त अल्लाह का ज़िक्र करती रहा करो! अल्लाह के ज़िक्र से हर मुस्लिम के लिये बहुत से रूहानी, शख़्सी, नफ़्सी, जिस्मानी और इज्तिमाई फ़ायदे हैं। किसी हालत और किसी वक़्त में भी अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहना, अल्लाह तआला ने अपने मुख़्लिस और अक़्लमंद बन्दों की ता'रीफ़ करते हुए फ़र्माया,

'वो अल्लाह तआला का ज़िक्र खड़े, बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं।'
(सूरह आले इमरान : 191)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बसर अल मुज़ाज़नी (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक आदमी ने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से कहा कि इस्लाम के उमूर बहुत हो गये हैं तो मुझे कुछ मुख़्तसर (संक्षिप्त) चीज़ बता दें ताकि मैं उसी पर अमल करता रहूँ, तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'तेरी ज़बान हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहनी चाहिये।'**
(तिर्मिज़ी : 3375, इब्ने माजा : 3793)

06. बात करने में फ़ख़्र करना :

जब भी किसी से बात करना हो तो ग़ुरूर से बचकर बुरे अल्फ़ाज़ और तीखे लहजे में बातचीत न करना! ये तरीक़ा और ये आदत अल्लाह के रसूल (ﷺ) के नज़दीक नापसंदीदा है। जैसा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है, **'क़यामत के दिन तुममें से सबसे नापसंदीदा मेरे नज़दीक वो होंगे जो बहुत बातूनी, बेतुकी, बनावटी और फ़ख़्रिया तकब्बुर की बातें करने वाले होंगे।'** (तिर्मिज़ी : 1642)

07. ख़ामोशी इख़्तियार करना :

ऐ मेरी बहन! आपकी ज़ात में अल्लाह के रसूल (ﷺ) की आदते मुबारका की झलक मिलनी चाहिये। ख़ामोशी ज़्यादा इख़्तियार करना, ग़ौर-फ़िक्र करना और कम हँसना।

हज़रत सम्माक (रह.) फ़र्माते हैं कि मैंने हज़रत जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से पूछा, **'क्या आपका अल्लाह के रसूल (ﷺ) की मजलिस में बैठना हुआ?'** फ़र्माया, **'हाँ! आप (ﷺ) बहुत ज़्यादा ख़ामोशी इख़्तियार करते, कम हँसते, आपके अस्हाबे किराम (रज़ि.) कभी कोई दिलचस्प बात किया करते तो हँस लिया करते और कभी-कभार मुस्कुरा देते।'** (मुस्नद अहमद : 5/68)

अगर बात करना चाहो तो बड़े सलीक़े और नर्मी से, भलाई और ख़ैरख़्वाही की बात करें वर्ना ख़ामोशी बेहतर है। ये भी अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने ही सबक़ दिया है, फ़र्माया, **'जो अल्लाह और क़यामत पर यक़ीन रखता है उसे चाहिये कि वो ख़ैर की बात करे या फिर ख़ामोश रहे।'** (बुख़ारी : 6018)

08. किसी की बात को काट देना :

बात करने वाले की बात काटने से रुक जायें और अगर किसी को जवाब देने का मौक़ा मिले तो बड़े रूखेपन, उसकी हतके इज़्ज़त (मानहानि) या उसका मज़ाक़ उड़ाने के अंदाज़ में जवाब न दें। हर एक की बात बड़े अदब और ध्यान से सुनें और अगर जवाब देना पड़े तो बड़ी अच्छे अंदाज़ और नर्म लहजे में जवाब दें। ख़ुशी और नर्मी के अंदाज़ में जवाब देने से आपकी शख़्सियत से एक अच्छे इंसान की शख़्सियत का इज़्हार होगा।

09. बात करने में किसी की नक़ल उतारना :

बातचीत के दौरान किसी का मज़ाक़ उड़ाने से पूरी तरह बचें। अगर कोई बेचारी औरत बात सहीह ढंग से नहीं कर सकती, किसी की ज़बान अटकती है या किसी की ज़बान में रवानी नहीं तो उसकी नक़ल उतारने या उसका मज़ाक़ बनाने की कोशिश नहीं करें। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का फ़र्मान है,

'ऐ ईमान वालों! मर्द दूसरे मर्दों का मज़ाक़ न उड़ायें मुमकिन है कि वे उनसे बेहतर हों, और औरतें दूसरी औरतों का मज़ाक़ न उड़ायें मुमकिन है कि वे उनसे बेहतर हों।' (सूरह हुजुरात :11)

रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है, **'मुस्लिम, मुस्लिम का भाई है। वो उस पर ज़ुल्म नहीं करता, न उसको ज़लील (अपमानित) करता है और न उसे हक़ीर (नीच) जानता है। किसी आदमी के बुरा होने की इतनी निशानी काफ़ी है कि वो अपने मुस्लिम भाई को हक़ीर जाने।'** (मुस्लिम : 2564)

10. तिलावत ख़ामोशी से सुनना :

जब क़ुर्आन करीम की तिलावत हो रही हो तो अल्लाह सुब्हानहू व तआला के कलाम का अदब करते हुए हर क़िस्म की बातचीत से रुक जाना चाहिये जैसा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का फ़र्मान है,

'और जब क़ुर्आन पढ़ा जा रहा हो तो उसकी तरफ़ कान लगाकर सुनो और ख़ामोश रहा करो! उम्मीद है कि तुम पर रहमत हो।' (सूरह आराफ़ :204)

11. बात करने से पहले सोचें :

बात करने से पहले पूरी तरह सोच लें! ऐसा न हो कि आपकी ज़बान से जल्दी में ग़लत और पकड़ किये जाने लायक़ बात निकल जाये। ये कोशिश करें कि ज़बान से बड़ी नर्म, मुनासिब और अच्छी बात ही निकले; तीखी, टेढ़ी, उल्टी-सीधी और सख़्त बात न निकलने पाये जो अल्लाह सुब्हानहू व तआला की नाराज़गी का कारण बन जाये।

ज़बान के कलिमात के बड़ी अहमियत है। कितने ही ऐसे इंसान हैं जिन्होंने अपनी ज़बान से चंद कलिमात निकाले तो उनके और पूरे समाज के लिये मुसीबत का सबब बन गये। इसी तरह कितनी ही ऐसा बातें हैं जिनकी अदायगी से इंसान जन्नत का हक़दार बन गया और कितनी ही ऐसी बातें हैं जिनकी अदायगी से जहन्नम के गड्ढे में जा गिरा। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **'कई बार इंसान अल्लाह की रज़ामंदी की बात करता है जिसकी अहमियत का उसे एहसास नहीं होता लेकिन अल्लाह मालिकुल मुल्क उसकी वजह से उसके दर्जात बुलन्द कर देता है और कई बार वो अपने मुँह से अल्लाह की नाराज़गी का ऐसा कलिमा निकालता है जिसके अंजाम का तो उसको इल्म नहीं होता लेकिन उसकी वजह से वो जहन्नम में चला जाता है।'** (बुख़ारी : 6478)

हज़रत मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी अकरम (ﷺ) ने कहा, **'क्या मैं तुझे तमाम नेकियों की जड़ न बताऊँ?'** मैंने अर्ज़ किया : **'हाँ ज़रूर! ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)!'** आप (ﷺ) ने अपनी ज़बान मुबारका को पकड़ा और फ़र्माया, **'इसको रोके रख (या'नी ज़बान की हिफ़ाज़त करते रहना)'** मैंने अर्ज़ किया, **'ऐ अल्लाह के रसूल (ﷺ)! क्या हम अपनी बातों की वजह से पकड़े जायेंगे?'** आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'तुम्हारी माँ तुम्हें गुम पाए ज़्यादातर लोग अपनी ज़बानों की वजह से औंधे मुँह जहन्नम में डाले जायेंगे।'**

(तिर्मिज़ी : 2616, इब्ने माजा : 3973)

12. अपनी ज़बान नेकी के लिये इस्तेमाल करें :

अपनी ज़बान का इस्ते'माल ज़रूर करें क्योंकि ये अल्लाह की बहुत बड़ी ने'मत है। लेकिन **'अम्र बिल्मअरूफ़ और नही अनिल मुन्कर (भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने)'** के लिये। अल्लाह तआला का फ़र्मान है,

'लोगों की सरगोशियों में अक्षर व बेश्तर कोई भलाई नहीं होती मगर जिसने सदक़ा करने का हुक्म दिया या नेक काम करने का या लोगों के बीच इस्लाह करने का हुक्म दिया, तो उन चीज़ों में भलाई और फ़ायदा है।' (सूरह निसा : 114)

इल्म सीखना

13. इल्म सीखना एक अच्छा काम और बाइज़्ज़त रास्ता है :

शिफ़ा बिन्ते अब्दुल्लाह (रज़ि.) बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाये उस वक़्त मैं उम्मुल मोमिनीन हफ़्सा (रज़ि.) के पास थी कि आप (ﷺ) ने मुझे फ़र्माया, **'तू उसे ज़ख़्मों पर पढ़ने का दम क्यों नहीं सिखा देती जैसे तूने उसे लिखना (किताबत करना) सिखाया।'** (अहमद, अबू दाऊद : 3887)

14. इल्मे दीन को समझने व समझाने के लिये सीखें :

इल्म सीखने का मतलब ये नहीं है कि आपके पास कोई सर्टिफ़िकेट ही हो जो किसी ओहदे, आला नौकरी या नाम के लिये हासिल करना लाज़मी समझा जाता है। नहीं! बल्कि दीने इस्लाम को उसके अहकाम के साथ जानने के लिये, कुर्आन को बेहतर से बेहतर तरीक़े से पढ़ने की मा'लूमात होना इल्म है, यह इसलिये ज़रूरी है कि कम से कम अपने रब की इबादत मुकम्मल बसीरत के साथ की जा सके।

ता'लीम हासिल करने का मतलब ही यही है कि एक औरत अपनी और अपनी औलाद वग़ैरह की तर्बियत उस सहीह मनहज के मुताबिक़ कर सके जो मनहज अल्लाह सुब्हानहू व तआला के प्यारे रसूल (ﷺ) का है और उसी पर उनके सहाब-ए-किराम (रज़ि.), ताबिईने इज़ाम और सालेहीन अज्मईन (रहि.) ने सीधी और महफ़ूज़ (सुरक्षित) राह पाने के लिये अमल किया।

15. किसी कम इल्म वाले का मज़ाक़ न उड़ायें :

किसी ऐसी बहन का मज़ाक़ न उड़ायें जो पढ़ना-लिखना नहीं जानती और न ही अपने आपको इल्म में बेहतर और दूसरी को कमतर समझें बल्कि दूसरी बहन के साथ तवाज़ुह और नर्मी से पेश आएं। नर्मी का तरीक़ा इख़्तियार करना दूसरों की नज़रों में इज़्ज़त व वक़ार को बुलन्द करने में आपका मुआविन (मददगार) साबित होगा। आपका सख़्त रवैया आपके इल्म के लिये वबाल बन जायेगा। कअब बिन मालिक (रज़ि.) बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (ﷺ) से सुना कि आपने इर्शाद फ़र्माया, **'जिसने इल्म इसलिये सीखा कि वो बेवक़ूफ़ों से झगड़ा करे या उलमा से फ़ख़्र करे (बरतरी दिखाने के लिये) और लोगों का मुँह फेर देने के लिये वो जहन्नम में जायेगा।'** (सुनन दारमी : 373, इब्ने माजा : 253)

16. गाना सुनना जायज़ नहीं :

ऐ मेरी बहन! गाने और मौसीक़ी के क़रीब न जा। अपना यही वक़्त अल्लाह के ज़िक्र और तिलावते कुर्आन में लगा ले। इससे सवाब भी होगा और दिली इत्मीनान व सुकून भी नसीब होगा। ऐ मेरी बहन! अपनी सुनने की ताक़त को, अपने कानों को गाने, संगीत और फ़हश (अश्लील) बातों से पाक रख। गाना, ज़बान और कानों की आफ़तों में से बड़ी आफ़त है। मौजूदा ज़माने में मुस्लिमों की अक्षरियत इस आफ़त से दो-चार है जिसकी वजह से दिलों को परेशानी, बेचैनी, मायूसी, अल्लाह के ज़िक्र से ए'राज़, उसकी किताब की तिलावत के लिये वक़्त न मिलने की वजह से दिलों में सख़्ती आ चुकी है। लोगों से दूरी और नफ़रत ज़्यादा होती चली जा रही है। यही वजह है कि एक बन्दे के दिल से ग़ैरत कम होती चली जा रही है। उलम-ए-किराम का फ़र्मान है कि गाना बजाना, ज़िना पर उभारने वाला है, ये बदकारी का पैग़ाम है, शैतान की अज़ान है। गाना दिलों में निफ़ाक़ पैदा करता है, बुरे ख़ात्मे और बुरे अंजाम की तरफ़ ले जाता है। ज़िंदगी के आख़री लम्हों को भलाई से बेगाना बना देता है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का फ़र्मान है,

'और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो लग़्वी बातों को मोल लेते हैं ताकि लाइल्मी में अल्लाह की राह से लोगों को बहकायें।' (सूरह लुक़मान : 6)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं, **'लह्वल हदीष़'** का मतलब 'गाना बजाना' है। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'मेरी उम्मत में कुछ लोग होंगे जो बदकारी, रेशम, शराब और नाच-गाने को हलाल समझेंगे।'** (बुख़ारी : 5590)

लिबास (ड्रेस)

17. बारीक व तंग लिबास न पहन :

ऐ मुस्लिम बहन! आप मुसलमान हैं, इसलिये आपका लिबास हमेशा शरीअत के दायरे में होना चाहिये। आपका लिबास न इतना बारीक हो कि जिन अंगों को छुपाना चाहिये

8 alhamdulillah-library.blogspot.in

वे नज़र आएं और न इतना टाइट (फिट) हो कि कपड़े पहने हुए होने के बावजूद जिस्म का कोई हिस्सा उभरा हुआ दिखाई दे।

18. बग़ैर आस्तीन का लिबास न पहनें :

ऐ मुस्लिम बहन! जिस स्लीवलेस (बग़ैर आस्तीन) और बड़े गले के कुर्ते को आज की औरतें फ़ैशन समझकर पहनने में कोई हर्ज़ महसूस नहीं करतीं वो आपके लिये शरीअ़त के ए'तिबार से सह़ीह़ नहीं है। ऐसे क़पड़े सतर ढाँकने के बजाय नंगेपन को ज़ाहिर करते हैं। इसके साथ ही आपको ऐसे कपड़े भी नहीं पहनने चाहिये जो मर्द पहनते हैं।

एक ह़दीष़ में अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने **उन मर्दों पर ला'नत की है जो औ़रतों जैसे कपड़े पहनते हैं और उन औ़रतों पर भी ला'नत की हैं जो मर्दों जैसा लिबास पहनती हैं।** (सुनन अबू दाऊद : 4098)

इज्तिमाआ़त

19. बुरी मजलिस से बचना :

ऐ मुस्लिम बहन! अल्लाह आपकी ह़िफ़ाज़त फ़र्माए। बुरी मजलिसों में शिर्कत से अपने आपको दूर रखो और जितनी मुमकिन हो सकता है अच्छी मह़फ़िलों और अच्छी इल्म जानने वाली, बाअ़ख़्लाक़ औ़रतों के इज्तिमाआ़त में शामिल होने की कोशिश करें।

20. मजलिस में अल्लाह का ज़िक्र करते रहना :

जब आप किसी मजलिस में अकेली या अपनी चंद बहनों के साथ बैठी हों तो अल्लाह का ज़िक्र करने से ग़फ़लत न करना और कोशिश यही करना कि ज़बान अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहे। ताकि जब मजलिस से फ़ारिग़ हों तो आपके ह़िस्से में बैठने का भी ष़वाब लिखा जाये। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया :

'जो शख़्स किसी मजलिस में बैठे और अल्लाह का ज़िक्र न करे तो उसका बैठना अल्लाह की त़रफ़ से उसके लिये बोझ बन जायेगा। या'नी उसके लिये ह़सरत और नदामत होगी।' (अबू दाऊद : 4856)

जब आप मजलिस ख़त्म करने, मजलिस बर्ख़ास्त करने का इरादा करें तो ये दुआ पढ़ना न भूलें, **'सुब्ह़ानकल्लाहुम्म व बिह़म्दि-क अश्हदु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलैक.** (स़ह़ीहुत्तग़ीब वत्तर्हीब : 1516)

जब आप ये दुआ पढ़ेंगी तो मज़कूरा मजलिस में जो लग़्वी, बेमाना, फ़िज़ूल बातें और ग़लतियाँ होंगी अल्लाह तआ़ला सब लग़ज़िशों और ग़लतियों को माफ़ फ़र्मा

देगा या'नी ये दुआ आपकी मजलिस का कफ़्फ़ारा बन जायेगी।

21. दूसरों की बातें करने से बचना :

ऐ मेरी बहन! अपनी मजलिस को ग़ीबत, चुग़ली और फ़िज़ूल बातों से पाक रखने की आ़दत बनाओ क्योंकि ये इन्तिहाई बुरी और नापसंदीदा आ़दत है और डरती रहो कि कहीं उसके बुरे अंजाम और सज़ा की लपेट में न आ जाओ। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त का फ़र्मान है,

'तुममें से कोई किसी की ग़ीबत न करे क्या तुममें से कोई अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पसंद करता है? तुम्हें उससे कराहत आयेगी।' (सूरह हुजुरात : 12)

22. मजलिस में किसी को डाँटना नहीं :

किसी मजलिस में अगर किसी की ज़बान से ग़ैर-मुनासिब कलिमात निकल जायें या कोई ग़लत़ी हो जाये तो आप उसकी इस्लाह़ ज़रूर करे लेकिन वहीं लोगों के सामने नहीं बल्कि मजलिस के इख़्तिताम (समाप्ति) पर अकेले में बड़ी नर्मी के साथ उसे समझा देने में आपका फ़र्ज़ भी अदा हो जायेगा और उसकी इस्लाह़ भी हो जायेगी, इंशाअल्लाह! लोगों के सामने ग़लत़ी बताने में या डाँटने से हो सकता है आपकी बहन अपने लिये बेइ़ज़्ज़ती की बात समझे और दूसरी बार शायद वो आपकी मजलिस में न आये।

कुतुबख़ाना/ लाईब्रेरी

23. घर में एक कुतुबख़ाना बना लें :

ऐ मेरी बहन! कोशिश ये करें कि घर के एक कोने या घर में किसी मुनासिब जगह पर एक लाईब्रेरी बना ली जाये जिसमें चंद ऐसी मुफ़ीद व अच्छी किताबें मौजूद हों जिससे आप और आपके घर वाले सब फ़ायदा उठायें।

24. अ़ख़्लाक़ को बिगाड़ने वाले लिट्रेचर पर पाबंदी लगा दें :

ऐ मेरी बहन! आप अपना क़ीमती वक़्त बर्बाद करने से गुरेज़ करें। ऐसी ग़ैर-मुनासिब बातों, बेकार रिसालों, मेग़्ज़ीन्स और लिट्रेचर जिसमें अ़ख़्लाक़ को बिगाड़ने वाली बातें हों उनको पढ़ने और देखने में वक़्त बर्बाद न करें। बल्कि ऐसी चीज़ों पर घर में लाने की पूरी पाबंदी लगा दें। अगर ये चीज़ें आएगी तो उन्हें देखा भी जायेगा और उन्हें पढ़ा भी जायेगा। इसलिये वे न घर मेंआएंगी न उनको देखने व पढ़ने का मौक़ा मिलेगा।

25. सीरते स़ह़ाबियात का मुत़ालआ़ लाज़िम करें :

बेहतर है कि आपके टेबल और आपकी लाईब्रेरी में मुख़्तलिफ़ मौज़ूअ (विभिन्न विषयों)

पर ऐसी किताबें हों जो हर औरत और हर बच्चा पढ़ सकें। आसानी से समझ में आने वाली किताबें हों जैसे **तफ़्सीर इब्ने कषीर, सीरत इब्ने हिशाम, किताबुत्तौहीद, रियाज़ुस्सालिहीन** वग़ैरह जिससे हर एक अपने अक़ीदे, अपने दीन, अपने प्यारे रसूल (ﷺ) की सीरते तय्यिबा, सहाब-ए-किराम के शब व रोज़ (रात व दिन), बच्चों की तर्बियत, वालिदैन के हुक़ूक़, घर वालों के हुक़ूक़, रोज़मर्रा पेश आने वाले मसाइल के बारे में मा'लूमात हासिल करके अपने इल्म व अमल में इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) कर सकें। ये चीज़ें उसी वक़्त हासिल होंगी जब घर से ऐसी ता'लीम हासिल करने का शौक़ पैदा होगा। घर में बैठे वक़्त भी बर्बाद न होगा और इल्म का ख़ज़ाना भी मिल जायेगा।

26. किसी मुफ़ीद नये लिट्रेचर का इल्म हो जाना :

जब आपको कोई मुफ़ीद पेम्पलेट या इस्लाहे मुआशरे (समाज सुधार) की किताब का इल्म हो जाये तो फ़ौरन अपनी लाईब्रेरी में उसका इज़ाफ़ा करें और अपनी दूसरी बहनों को ख़रीदने और पढ़ने की तर्ग़ीब दिलाएं। इसी तरह अगर आपको किसी ऐसी किताब का इल्म हो जाये जो अख़्लाक़ को ख़राब करने वाली हो, तो उसके बारे में भी आप अपनी बहनों को ज़रूर इत्तिला (सूचना) दें ताकि वो ग़लती से भी ऐसी किताब न ख़रीदें जिससे सबका ईमान ख़राब हो।

27. मुताल'आ (अध्ययन) में मसरूफ़ रहना बेहद ज़रूरी है :

ऐ मेरी बहन! आप कोशिश करें कि हर लम्हे को क़ीमती बनाया जाये और वक़्त को बर्बाद करने की बजाय इल्म व मुताल'आ में गुज़ारा जाये।

घर से बाहर निकलना

28. बग़ैर ज़रूरत घर से न निकलें :

ऐ मेरी बहन! कोशिश तो यही करो बिला वजह घर से निकलना न हो। हाँ! अगर कोई ज़रूरी काम पड़ जाये और बाहर जाना ज़रूरी हो तो घर वालों के मश्वरे के बाद बहुत ही मुख़्तसर वक़्त के लिये जिसमें काम मुकम्मल (पूरा) हो जाये, निकला जा सकता है। ज़रूरत से ज़्यादा आपका घर से बाहर रहना मुनासिब नहीं।

29. ख़ुश्बू लगाकर न निकलें :

ऐ मेरी बहन! अगर आपको घर से बाहर जाना पड़े तो ख़ुश्बू और ज़ैबो-ज़ीनत करने से पूरी तरह बचने की कोशिश करें ताकि लोगों की नज़रें आपकी तरफ़ न उठें। हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया,

'जब कोई औरत ख़ुश्बू लगाकर लोगों के पास से गुज़रती है कि वो उसकी ख़ुश्बू पायें तो वो औरत ऐसी है ऐसी है।' (अबू दाऊद : 4173; निसाई : 5126)

या'नी वो औरत बदकार है, ज़ानिया है। इज़्ज़त दाग़दार होने से बचने के लिये बेहतर है कि आप अपना पूरा जिस्म ढाँप कर निकलें। आहिस्ता क़दमों से चलें ताकि चलने में आवाज़ न आये और न गुज़रने से ख़ुश्बू आये।

30. इधर-उधर बग़ैर ज़रूरत नहीं देखें :

ऐ मेरी बहन! जब आप चल रही हों, गली, मुहल्ले, बाज़ार वग़ैरह में हों तो नज़रें घुमाकर देखने और इधर-उधर बग़ैर ज़रूरत झाँकने से बचें। नज़रों का इधर-उधर उलझ जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं। जब आप अपनी मत्लूबा (चाही गई) चीज़ ख़रीदने लगें तो दुकानदार से ज़्यादा बातों में मश्ग़ूल न हों। ज़्यादा बातें करने से बीमार दिलों से फ़ितना भड़कने का इम्कान (सम्भावना) होती है।

31. बुराई को अच्छा न समझें :

ऐ मेरी बहन! जब आप घर से बाहर, बाज़ार में कोई नापसंदीदा चीज़ देखें तो उस पर आपकी तरफ़ से कराहत का इज़हार होना लाज़िम है। अगर ज़बान से नहीं तो कम से कम दिल से गुस्सा, नापसंदीदगी और बुराई का एहसास तो होना ही चाहिये। अल्लाह तआला फ़र्माता है,

'मोमिन मर्द व औरत आपस में एक दूसरे के (मुआविन व मददगार) दोस्त हैं वो भलाइयों का हुक्म देते और बुराइयों से रोकते हैं।' (सूरह तौबा : 71)

32. बाहर घूमते रहने की आदत अच्छी नहीं :

कुछ औरतों ने घर से बाहर निकलने को अपना शौक़ और आदत बना लिया है। वे घर से बाहर निकलती हैं और इतनी बेपरवाह हो जाती हैं कि घर की ख़बर नहीं होती। ऐसी औरतों से ख़ैर व भलाई की उम्मीद नहीं रखी जा सकती। इसमें वक़्त बर्बाद होने के अलावा फ़ित्ने के इम्कान (सम्भावना) से इन्कार नहीं किया जा सकता। मैं तो अल्लाह से पनाह माँगता हूँ कि आपका नाम इस क़िस्म की औरतों में शामिल न हों क्योंकि ये आदत बहुत ही नापसंदीदा और बुरी है।

33. जिस चीज़ की ज़रूरत हो वही ख़रीदना :

ऐ मेरी बहन! जब आप अपने घर वालों के साथ या अपने ख़ाविंद के साथ बाहर कोई चीज़ ख़रीदने के लिये निकलें तो जिस चीज़ की ज़रूरत हो वही ख़रीदें। ये न हो कि आप

अपने घर को सुपर मार्केट की ब्राँच समझते हुए पूरी मार्केट ही लाकर घर भर दें। ये बहुत बुरी आ़दत है कि जब मार्केट में जो चीज़ हाथ लगे उसे ख़रीद लिया जाये चाहे उसकी ज़रूरत हो या न हो। ये फ़िज़ूलख़र्ची की एक क़िस्म है जिसे अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त भी पसंद नहीं करता। अल्लाह हम सब को हिदायत फ़र्माये, आमीन!

दुआ

34. जो कुछ माँगना है अल्लाह से माँगो :

ऐ मेरी बहन! आप क़मज़ोर हैं, मुहताज हैं, फ़क़ीर हैं; हमेशा अल्लाह के सामने दुआ के लिये अपने हाथ उठाती रहा करें। उसी से माफ़ी की इल्तिजा करती रहा करें। सिह्हत व तंदुरुस्ती, ख़ैर व आ़फ़ियत, दुनिया और आख़िरत की बेहतरी, या'नी हर चीज़ उसी एक अल्लाह से त़लब करती रहा करें। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया :

'आपका रब हयादार है। वो (इस बात से) हया करता है जब बन्दा उसके सामने अपने हाथ उठाये तो वो उन्हें ख़ाली वापस लौटा दे।' (इब्ने माजा : 3117)

या'नी जब उससे दुआ की जाती है तो वो ख़ाली हाथ वापस नहीं लौटाता। लेकिन दुआ की क़ुबूलियत के लिये जल्दी नहीं करनी चाहिये क्योंकि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'कोई भी बन्दा अल्लाह के सामने अपने हाथ ऐसे नहीं उठाता कि उसकी बग़लें ज़ाहिर हो रही हों और वो अल्लाह से कोई सवाल कर रहा हो, अल्लाह उसे ज़रूर अ़त़ा कर देता है लेकिन (उसे) जो जल्दी न करे।'** स़ह़ाब-ए-किराम (रज़ि.) ने पूछा, **'ऐ अल्लाह के रसूल! वो जल्दी कैसे करता है?'** फ़र्माया, **'वो कहता है कि मैंने अल्लाह से माँगा है, अल्लाह से माँग रहा हूँ लेकिन कुछ नहीं मिला।'** (तिर्मिज़ी : 3969)

अल्लाह तआ़ला ही दुआ को क़ुबूल करता है लेकिन इसमें जल्दबाज़ी नहीं मचानी चाहिये। दुआ करने का त़रीक़ा ये है कि अपनी दुआ अल्लाह की ह़म्द (ता'रीफ़) व बड़ाई के ज़िक्र के साथ और अल्लाह के रसूल (ﷺ) पर दरूद व सलाम पढ़कर शुरू करें। जब दुआ पूरी करें तो तब भी इसी त़रह़ ह़म्द व ष़ना और दरूद शरीफ़ पढ़ें। जब भी अल्लाह से कुछ चाहिये तो सच्चे दिल और पूरी तवज्जह से अल्लाह से माँगें।

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'अल्लाह तआ़ला से दुआ इस त़रह़ किया करो कि तुम उसके क़ुबूल होने का यक़ीन रखते हो और याद रखो कि अल्लाह तआ़ला ग़ाफ़िल दिल वाले की दुआ क़ुबूल नहीं करता।'** (तिर्मिज़ी : 3479)

ऐ मेरी बहन! दुआ माँगते वक़्त गुनाह और क़त़्अ़-रह़मी (रिश्ता तोड़ने) की दुआ से हमेशा बचती रहना। अगर दुआ की क़ुबूलियत के आष़ार नज़र न आ रहे हों तो भी मायूस होने की कोई ज़रूरत नहीं अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला उसी दुआ को आपके लिये आख़िरत में (अ़त़ा करने के लिये) ज़ख़ीरा कर देगा या फिर इसी दुनिया में आपके गुनाहों के कफ़्फ़ारे या किसी आने वाली मुसीबत को टाल देने का सबब बना देगा।

35. अल्लाह की क़ुर्बत ह़ासिल करना :

ऐ मेरी बहन! फ़राइ़ज़, नवाफ़िल और ज़िक्रे इलाही और नेकी की दा'वत दे कर अल्लाह की क़ुर्बत (निकटता) ह़ासिल करने की जद्दोजहद में लगी रहो। इंशाअल्लाह! ऐसा करने से आप अल्लाह के यहाँ अज्रे अ़ज़ीम, ष़वाबे कष़ीर (बहुत ज़्यादा ष़वा) और आ़ला दर्जात से नवाज़ी जाएंगी। अल्लाह करीम आपको अपनी ऐसे नेक बन्दियों की स़फ़ (लाइन) में शामिल करेगा जिनको न इस दुनिया में किसी का ख़ौफ़ होगा और न आख़िरत में कोई परेशानी होगी। अल्लाह जिसकी चाहे उसकी दुआऐं क़ुबूल करता है, उसकी परेशानियों और ग़मों को दूर करता है और उनके दिल इत्मीनान व सुकून और राह़त से भर देता है।

प्यारे रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'अल्लाह ख़ालिक़े कायनात का फ़र्मान है कि जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी की उसे मेरी त़रफ़ से ऐलाने जंग है और मेरा बन्दा जिन-जिन इबादतों से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल करता है और कोई इबादत मुझको उससे ज़्यादा पसंद नहीं है जो मैंने उस पर फ़र्ज़ की है (या'नी फ़राइ़ज़ मुझको बहुत पसंद हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, ह़ज्ज, ज़कात) और मेरा बन्दा फ़र्ज़ अदा करने के बाद नफ़्ल इबादतें करके मुझसे इतना नज़दीक हो जाता है कि मैं उससे मुह़ब्बत करने लग जाता हूँ। फिर जब मैं उससे मुह़ब्बत करने लग जाता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वो सुनता है, उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वो देखता है, उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वो पकड़ता है, उसका पाँव बन जाता हूँ जिससे वो चलता है और अगर वो मुझसे माँगता है तो मैं उसे देता हूँ, अगर वो किसी दुश्मन या शैत़ान से मेरी पनाह का त़ालिब होता है तो उसे मह़फ़ूज़ रखता हूँ।'** (बुख़ारी : 6502)

36. दीनदारों से ता'ल्लुक़ात बढ़ायें :

ऐ मेरी बहन! जब आप ऐसी औ़रत को देखें जो दीन की पाबंद और रब का हुक्म मानने वाली है तो आपको उससे ता'ल्लुक़ात बढ़ाने चाहिये। उससे मुह़ब्बत का इ़ज़हार करके उसे अपनी दोस्त बना लें क्योंकि अल्लाह के लिये मुह़ब्बत करने के बहुत फ़ायदे हैं और

उसके अ़लावा अल्लाह तक़र्रुब भी ह़ासिल होता है।

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'अल्लाह तआला फ़र्माता है मेरी ता'ज़ीम के लिये जो आपस में मुह़ब्बत करते हैं उनके लिये नूर के मिम्बर होंगे अम्बिया और शुहदा उन पर रश्क करेंगे।'** (तिर्मिज़ी : 2390)

37. अपने वक़्त की क़द्र करें :

ऐ मेरी बहन! अगर आप अपने वक़्त की स़ह़ीह़ त़रीक़े से तक़सीम न करेंगी तो वक़्त हाथ से निकल जायेगा। आप त़ालिबा (छात्रा, स्टुडेण्ट) हैं या घरेलू औरत, कुछ भी हो, आपको अपने क़ीमती वक़्त का एहतिताम करना ही होगा।

कुर्आन पढ़ना है, ह़दीष़ की मा'लूमात लेनी हैं, अपने स्कूल या मदरसा के दुरूस (चेप्टर्स) याद करने हैं, घर के काम-काज, अ़ज़ीज़ व अक़ारिब, वालिदैन, ख़ाविंद की ख़िदमत और रात व दिन के अज़्कार के लिये भी वक़्त निकालना है। अगर वक़्त को स़ह़ीह़ इस्तेमाल न किया तो फिर वक़्त के बर्बाद होने में तो कोई शक नहीं लेकिन इससे आपको ह़सरत व नदामत (शर्मिन्दगी) के सिवाय कुछ ह़ासिल न होगा।

38. रिज़्क़ और उम्र में बरकत का सबब (कारण):

अपने रिश्तेदारों के यहाँ आने-जाने में बरकत है। उनकी ज़ियारत करना उम्र में ज़्यादती का और रिज़्क़ में बरकत का सबब होता है। आपको चाहिये कि अपने अक़रबा (प्रियजनों) और रिश्तेदारों की ज़ियारत को फ़ायदेमंद बनायें, उन्हें भलाई की बातों की तल्क़ीन करें, नापसंदीदा और अख़्लाक़े रज़ीला (घटिया चरित्र) वाली बातों से ख़ुद भी गुरेज़ करें और अक़रबा को भी बचने की तल्क़ीन करें। ह़ाल व अह़वाल पूछने की मजलिस में ही उन्हें इन फ़ित्ने में डालने वाली चीज़ों के अंजाम से डरा दें। आपका अपने अ़ज़ीज़ व अक़ारिब की ज़ियारत करना ख़ैर व बरकात के नुज़ूल व ह़ुसूल का सबब बन जाता है।

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'जिसे पसंद है कि उसका रिज़्क़ बढ़े और उसकी उम्र लम्बी हो, वो स़िलारह़मी किया करे।'** (बुख़ारी : 5985)

39. गुनाह पर फ़ख़्र न करें :

ऐ मेरी बहन! आपको अल्लाह के अह़काम की ज़्यादगी, उनकी मुख़ालिफ़त (विरोध) करने और उनमें सुस्ती करने का आ़दी और मग़रूर न बना दे। कोई वक़्त आयेगा कि अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला इन्सान ग़ुस्से से अपने हाथ काट कर खायेगा और मोमिन अपनी नजात पर ख़ुशी के इज़हार से अपना हाथ लहरा रहा होगा। कुर्आन करीम में सुब्ह़ानहू व तआला फ़र्माता है,

'जिसे उसका नामा-ए-आ'माल उसके दायें हाथ में दिया जायेगा तो वो कहेगा कि ये लो मेरा नामा-ए-आ'माल पढ़ो! मुझे तो पक्का यक़ीन था कि मुझे अपना ह़िसाब मिलना है। लेकिन जिसने अपने आप पर ज़ुल्म किया होगा, वो उस वक़्त की सख़्ती और हौलनाकियों को देखकर कुछ न कर सकेगा, सिवाय इसके कि वो कहेगा कि काश! मैं अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) की बात को मान लेता और मुझे ऐसा अंजाम देखना नस़ीब न होता।' (सूरह ह़ाक़्क़ह :19-20)

40. अपने दिल में रह़म और नर्मी पैदा करें :

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **'एक शख़्स रास्ते में चल रहा था कि उसे बहुत तेज़ प्यास लगी उसे एक कुंआ मिला और उसने उसमें उतर कर पानी पिया। जब बाहर निकला तो उसने वहाँ एक कुत्ता देखा जो हाँप रहा था और प्यास की वजह से तरी को चाट रहा था उस शख़्स ने कहा कि ये कुत्ता भी उतना ही ज़्यादा प्यासा मा'लूम हो रहा है जितना मैं था। चुनाँचे वो फिर कुंए में उतरा और अपने जूते में पानी भरा और मुंह से पकड़कर ऊपर लाया और कुत्ते को पानी पिला दिया। अल्लाह तआला ने उसके इस अ़मल को पसंद फ़र्माया और उसकी मग़्फ़िरत कर दी।'** स़ह़ाब-ए-किराम (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, **'या रसूलुल्लाह (ﷺ)! क्या हमें जानवरों के साथ नेकी करने में भी ष़वाब मिलता है।'** आपने फ़र्माया, **'तुम्हें हर ताज़ा कलेजे वाले पर नेकी करने में ष़वाब मिलता है।'** (बुख़ारी : 6009)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'एक औरत को एक बिल्ली की वजह से अ़ज़ाब हुआ, जिसे उसने इतनी देर बाँधे रखा कि वो भूख की वजह से मर गई। और औरत इसी वजह से जहन्नम में दाख़िल हुई।'** (स़ह़ीह़ बुख़ारी, स़ह़ीह़ मुस्लिम)

ऐ मेरी बहन! हर एक छोटे और बड़े पर रह़म किया करो, यहाँ तक कि जानवरों के साथ भी। जैसा कि प्यारे रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'जो रह़म नहीं करता उस पर रह़म नहीं किया जाता।'**

41. ग़ैर इस्लामी ऐलानात से मुताष़्षिर (प्रभावित) न हों :

ऐ मेरी बहन! हर रोज़ नये से नये ऐलानात और इश्तिहारात जो हर त़रफ़ से औरतों को नई तहज़ीब और रोशन ख़याली (आधुनिकता) का नाम देकर फ़ित्ने में डालने की कोशिश कर रहे हैं, उनसे हर्गिज़ मुताष़्षिर न होना। एक मुस्लिम व शरीफ़ औरत को उसकी पाकीज़गी, पर्दा और ह़या की ह़दों से निकलने के लिये मुख़्तलिफ़ वसाइल (विभिन्न

12 alhamdulillah-library.blogspot.in

सांधन) इस्ते'माल किये जा रहे हैं जिनसे ख़ुद बचना और दूसरी बहनों को बचाना आपका काम है। ऐसा न हो कि कहीं ग़ैरों की तो क्या अपनों की ही बातों में आकर आप रोशन ख़याली के जाल में फँस जायें, वर्ना इज़्ज़त महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहने का भी यक़ीन नहीं और गुनाह से बचने की भी उम्मीद नहीं।

42. अपने दीन को मज़बूती से थामे रहो :

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का फ़र्मान है, **'तुम ही ग़ालिब रहोगे, अगर तुम ईमानदार हो।'** (सूरह आले इमरान : 139)

अगर आप अपने दीन पर मज़बूती से अ़मल करती रहेंगी, सुस्ती और कमज़ोरी न दिखायेंगी तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त भी आपको कामयाबी से हमकिनार करेगा। आप दीने इस्लाम के अह़काम को फैलाने में शर्म न करें, जहाँ उसकी तौहीन या उसका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा हो वहाँ भी उसके दिफ़ाअ़ (सुरक्षा करने) में पीछे न हटें और अपने अ़क़ीदे को थामे हुए अपने दीन पर डटी रहें।

43. इस्लामी पहचान को अपनी ग़िज़ा बना लें :

दीनी कैसेट, इस्लामी तक़रीरें इज्तिमाई दीनी दर्स और मुफ़ीद इस्लामी महफ़िलों को आप अपनी ग़िज़ा (ख़ुराक़) बना लें और मुफ़ीद दीनी रिसाले और अख़बारात का मुत़ालआ़ करती रहा करें जिनसे आपके इ़ल्म में इज़ाफ़ा होता हो।

44. अच्छे अख़्लाक़ को अपनी आ़दत बना लें :

ऐ मेरी बहन! घर में, स्कूल व कॉलेज में, हर महफ़िल में, अ़ज़ीज़ व अक़ारिब, दोस्तों और पड़ौसियों में नफ़ा देने वाले इ़ल्म, भलाई, अख़्लाक़े ह़सना (उत्तम चरित्र) और आ़दाते जमीला (अच्छे स्वभाव) को आ़म करने की कोशिश करें।

45. घर के काम-काज में शर्म महसूस न करें :

ऐ मेरी प्यारी बहन! आप हमेशा ये कोशिश करें कि घर के काम -काज में अपने घर वालों का हाथ बटायें। इसमें ख़ैर भी है और उनकी ख़िदमत भी, जिसके सिला (बदले) में आपको नेक दुआएँ मिलेंगी और उसमें एक ऐसी ट्रेनिंग भी है जो इंशाअल्लाह आपकी आने वाली ज़िंदगी को कामयाब बना देगी। फ़ारिग़ (फ़ालतू) बैठने, सुस्ती करने या स्कूल-मदरसे के होमवर्क के नाम से हर वक़्त घर के काम-काज से जी चुराना और दामन बचाना कोई अच्छी आ़दत नहीं है। ये बुरी आ़दत आपको कामचोर, आलसी और सुस्त बना देगी। इस बुरी आ़दत की वजह से घर में आपकी क़द्र कम होगी और माँ-बाप के प्यार व उनकी दुआओं से महरूम होना पड़ेगा।

46. हर वक़्त हंसमुख और मुस्कुराते रहें :

अल्लाह के रसूल (ﷺ) का फ़र्मान है, **'अपने भाई के सामने मुस्कुराना भी आपके लिये स़दक़ा है।'** (तिर्मिज़ी)

ऐ मेरी बहन! हंसमुख रहने और मुस्कुराते चेहरे में न आपका कुछ बिगड़ेगा और न ही कुछ ख़र्च करना पड़ेगा बल्कि इसी वक़्त में आप अपनी बहनों और मजलिस में बैठी दोस्तों को अपनी त़रफ़ मुतवज्जह भी कर सकेंगी और बात भी बाअ़सर (प्रभावशाली) भी रहेगी, इसमें इज़्ज़त भी है और अज्रे ष़वाब भी।

47. न ग़ुस्सा करें, न ग़ुस्सा दिलाएं :

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और कहा कि मुझे नसीह़त कीजिये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'ग़ुस्सा नहीं किया कर!'** इस सवाल को उस आदमी ने कई दफ़ा दोहराया तो फिर भी आप (ﷺ) ने यही नसीह़त फ़र्माई, **'ग़ुस्सा नहीं किया कर!'** (बुख़ारी : 6116)

ऐ मेरी प्यारी बहन! आपको ये मा'लूम होना चाहिये कि ये ग़ुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से होता है। अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, **'ग़ुस्सा शैत़ान की त़रफ़ से है और शैत़ान आग से पैदा किया गया है और आग पानी से बुझाई जाती है, लिहाज़ा जब किसी को ग़ुस्सा आये तो वुज़ू कर लिया करे।'** (अह़मद)

तो ऐ मेरी बहन! दूसरों की ग़लतियों और गुस्ताख़ियों को माफ़ करने की आ़दत बना ले तो आपका किरदार बुर्दबारी (संजीदगी) से भरपूर हो जाएगा।

48. कुफ़्फ़ार की आ़दात न अपनायें :

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **'जो किसी की मुशाबिहत (समरूपता) करता है वो उन्हीं में से होता है।'** (अबू दाऊद : 4031)

ऐ मेरी बहन! कुफ़्फ़ार की तक़लीद करने से हर वक़्त बचना चाहिये। उनकी आ़दतों ख़ुसूसन खाने-पीने लिबास वग़ैरह के त़रीक़े अपनाने से बचना।

49. नमाज़ में ताख़ीर (देरी) न करें :

बहुत सी औ़रतें ऐसी हैं जो नमाज़ के बारे में सुस्ती करती हुए इसे लेट कर देती हैं। घर के काम -काज या फ़िज़ूल बातों में मश्ग़ूलियत की वजह से, ख़ुसूसन शादियों, वलीमों की महफ़िलों में बहुत ही ग़फ़लत कर देती है। नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक! मैं अल्लाह से पनाह माँगता हूँ कि आप उन जैसी हो जायें। कुर्आने करीम में अल्लाह सुब्ह़ानहू व

तआ़ला इर्शाद फ़र्माता है,

'तबाही है उन नमाज़ियों के लिये जो अपनी नमाज़ों में सुस्ती कर जाते हैं।'

(सूरह अबस : 4-5)

या'नी नमाज़ों में ताख़ीर (देरी) कर जाते हैं यहाँ तक कि नमाज़ का वक़्त भी निकल जाता है। इसलिये ऐ मेरी प्यारी बहन! नमाज़ जैसी अहमतरीन इबादत में सुस्ती बरतने की अगर आपको आ़दत हो तो इसे फ़ौरन छोड़ दो।

50. नफ़्स का तज़्किया होना लाज़मी है :

नफ़्स के तज़्किया (व्यक्तित्त्व के शुद्धिकरण) के लिये सबसे बेहतरीन ज़रिआ़ रोज़ा है जिसकी अहमियत भी बहुत है और उसका अज्र भी बहुत ज़्यादा है। इंसान के नफ़्स के तज़्किये और इस्लाह़ के लिये इसका बहुत बड़ा किरदार है।

ऐ मेरी प्यारी बहन! ये आपके लिये बहुत ही बेहतरीन होगा कि आप नफ़्ली रोज़ों को जैसे शव्वाल के छह और अय्यामे-बीज के रोज़ों (हर महीने की 13-14 व 15 तारीख़) के तीन रोज़ों को अपनी आ़दत में शामिल कर लें।

प्यारी बहना! ये तमाम नसीह़ते, एक मुस्लिम होने के नाते आपकी ख़ैरख़्वाही की नीयत से शाए (प्रकाशित) की गई हैं। आपसे गुज़ारिश की जाती है कि एक मुस्लिमा होने के नाते आप इन पर संजीदगी से ग़ौर करें और अपनी दीगर मुस्लिम बहनों तक इस किताब को पहुँचाएं और उन्हें ख़रीदकर पढ़ने की सलाह दें। इसके साथ ही आप अपनी ग़ैर-मुस्लिम सहेलियों को भी इस्लाम की इन अच्छी-अच्छी बातों की जानकारी दें। ऐसा करना आख़िरत में आपके लिये बहुत फ़ायदेमंद होगा, इंशाअल्लाह!

अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला से दुआ़ है कि वो तमाम मुसलमानों को इन नसीह़तों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़र्माए और शैत़ान के शर (बुराइयों) से बचाकर हम सबके लिये शरीअ़ते-मुह़म्मद (ﷺ) पर चलना आसान कर दे, आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आ़लमीन!!

*****